

श्रीगणेशाय नमः

५

भारत सरकार द्वारा प्रकाशित

DH 182

ॐ वायुमल्ल. नैजामीव द्रो. भांजनिगमू. शुभयकन. वृत्ति कापत्रिरूपपद्मरा अ३ नं.
 विचिन्त्य. गय्यावद करुकादिकं. उं ग्रां अं खं हं लं मं पं गं वं ज्ञा गप ज्ञमृमप ज्ञप्रदी
 पनूपं पवनमल्ल. पुलिग. पुलिगाग्निगापविलि नंदृष्टा. नद नूपजि अ४ का न ऊ निग
 विगस्त्रिमाशान्कलिगा धामूरवां मृगमयगुकरवदा अ न द्वा प्यविलि नं. पा नूद ६। दृर्ग
 सन्निग्रय गीगिरु नै विचिन्त्यम् ॥ न इ पजि. उं अ४ हं ङूं ष्च कु ज प्रयं दृष्टा. न दृग्भि
 रिन्धद भादिग्वर्कि वी न ग्व जी धीं ज्ञाना मृगमा मीय. शुभे बा कु न षू प्रव ग यम् ॥ उं का
 नादिक म वि क्रम आ वि वि न म व ला व्क. शुभ कु न हो वा धि गिष्ठम् ॥ रुं क न प्रयं प०

नपूर्वकं रुगवतीमा कृष्य पूजयः संख्य प्रथम ॥ ॐ अ० हं ॥ गवतु मूद्रा कन ॥ अ. पा. पृ
पं. लां. घं. उ. न. ॥ ॥ गमा अलिकालिपविधिर्ग. चन्द्रसूर्यकनक्षया नगर्ग नहं का नैद
ष्ट ॥ ॐ अ. न्या न्या नू गगा ४ सर्व धर्मा ४ ॐ पयस्य जा नू गगा ४ सर्व धर्मा ४ अग्न्य न्या नू गगा ४
सर्व धर्मा ४ द. व्या ४ पुमा दी. समय प्रमा दी. न इ क वाचस्य जप ज प्रमा दी. न न्य न स न्य न
रु व यू ज गा ४ द व्या म मा नू ग्र ह रु. रु गा ४ हं अ ४ शु क्रे क शु क्रे व द्रा जि द्रा वि रा व्य ॥ ॐ
व द्रा अलि. रु ४ हं वं हा ४ व द्रा अ किं न्य ४ समय स्वी द. ह्य हा ४ ॥ ॐ ख श वा हि र सर्व य
ऊ वा ऊ स. रु ग प्र म पि ४ ॥ चान्मा डा अ प स्मा न ता कि न्या द य ४ ॥ मं वलि गृ द्र न्यु. सम

॥ ॐ भः ह्रीं श्रीं मन्त्रं वज्रमन्त्रं गुणवत्तमं ॥ कमला

॥ वन्द्यवरादिसमग्रीसंज्ञाय जगिसंयं । सद्गुणं

नाः॥ ला का कृ श्य प्र व र्ण न्या सा व रि श्या त म स द ॥ ॥ शं स्र श्या व ॥ सा स र्व ध र्मा ॥

नाः। नो को कृष्य प्रवर्ग्य न्यासा वागक्ष्य नमः सदा ॥ ॥ अस्वला व शुद्धा स वे धम्मा ॥
सदा व शिवा ॥ ॥ अस्वला व शुद्धा स वे धम्मा ॥

खराव शुद्धाह ॥ गून्प गारून न वज खरावात्मकी ह ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ मारुन्या कायध

वथरु ॥ ॥ वदनकजलाधनदक्षिणरुक्म अकावधसूर्यमधुलं ॥ वामरुक्म अ

वयम् ॥ ॥ विदन् कज्जलघनदाकुमहस्म अस्काजघनसूयमछल ॥ विमहस्म अ
काजघनसूयमछल ॥ विमहस्म अ

[illegible]

मोक्षो-रुंरुंरुंरुं ॥ ॥ ॐ स्वाहावज ॥ ॐ शिः स्वाहा घ ॥ ॐ वज्रसत्त्वसगुहा

त्वञ्च नत्न नृन् जेवञ्च धर्मगायि नवञ्च कर्मकु लाहवः ॥ ३ ॥ ई ट कि ऊः हं ३ ई ट कि जा

ॐ श्रीवज्र हं हूँ नमः कुरु कुरु दे उक्तिनी जा

नमस्तु नमोहा ॥ पंचापचात्र पूजा प्राकृती ॥ ओं खलु अत्र हं रुट् ॥ ओं खलु अत्र हं सर्व
विद्या नत्मानं यत् ॥ गन्ध ॥ ओं वज्र गन्ध स्वाहा ॥ पूष ॥ ओं वज्र पूष स्वाहा ॥ धूप ॥ ओं वज्र
धूप स्वाहा ॥ दीप ॥ ओं वज्र दीप स्वाहा ॥ नेत्र ॥ ओं वज्र नेत्र स्वाहा ॥ लाज ॥ ओं वज्र ला
जाय स्वाहा ॥ जाकि स्नान लव सधूना व वलि स गय ॥ ओं अका नमस्व सर्व धर्मा ना
माय नृत्पन्न त्वा दुः ओं अ० हं रुट् स्वाहा ॥ ओं सुप्रणिष्ठि न वज्र स्वाहा ॥ वलि अधिष्ठान
ओं अ० हं मधुना धिष्ठान ॥ मंत्र ॥ धन ॥ ओं रुः हाः श्रीः अ० स्वाहा ॥ पात्र ॥ धन ॥ पुनः
पात्र ॥ शुभं गारा वयम् ॥ हिं कान्ध प अरु रु नं ॥ मोका न ध मा म की कृष्णी धिष्ठु जी

वज्र हस्ती हं कान्ध धा क्षी कृष्णी धिष्ठु जी वज्र वज्र हस्ती नथा ० संपूट जी गान महा गरी
गान डवीरु नी प० धन ॥ पुनः ह० हा० श्री० अ० खं स्वाहा ॥ ओं सर्व रु क कामिनी सर्व रु क
अधनी गुप्ता व जी धी का ध ग्वनी सर्व ड व्य व्या पि निः ॥ धय २ हं ॥ पुनः ह० हा० श्री०
अ० खं स्वाही ॥ अमृ न अमृ न प्रवक्ष्य हं ॥ रु कान्ध रु न वरु हा कान्ध गन्ध ना धनी
क्षी कान्ध वीरु हं गात्र अका न ध मृ न अमृ न प्रवक्ष्य म् ॥ न न वाम ह स्त सी प्रक्षयित्वा
त्रि अंगुलि पटा क ह स्त नरु मि अधिष्ठान ॥ ओं वज्र रु म हं ॥ पू जा ओं ओं लौ दं मां
कां ओं रुं कां कां लं कां रुं पुं गं सों सुं नं सीं मे कुं ॥ पि ० प पि ० ० ॥ रु ग्रा प रु रु ॥ रु

न्दापकन्दः ॥ मलापका मला ॥ ६८ मभनापमभनः ॥ ६९ न्याचार्य ॥ गगाभंगन्यास ॥
 ओं हः वज्रसत्त्वशीलः रुदय ॥ नमः शिवे वाचन शुक्र शिवसि ॥ स्वाहा हं पद्मनृथ्यध्वन
 जक शिखायी ॥ वाषट् हः रुजक कृष्णः स्कंधदय ॥ हूं हं हा वज्रसूर्य जक नृदय ॥
 रुट् रुट् हं पद्ममाध्ववज्रायसी ॥ - ओं वे वज्रावाहि जकाना हो ॥ हां थां यामिनी नीलाह
 दय ॥ क्रोमां भाहिनी शीला वन्क ॥ ऊ क्रो संचा जधीपीमा शिवसि ॥ हूं हं सन्ना शनिह
 रिता शिखायी ॥ रुट् रुट् हं धूमवर्धन सर्वज्ञेषु ॥ ॥ ओं स्थानभज ऊ हूं ॥ ॥ ओं
 जागम जऊ हूं ॥ ॥ ओं आत्मानभज ऊ हूं ॥ ॥ शीवस ॥ ॥ नमः ॥ ॥ स्वहृदय अकाशध्वन्य
 नाहनिखी

३ वज्रसूर्यः सखा स्कंध

म धुलापविकृष्ट हं का जे ॥ ७० का जे व कं ॥ ७१ का जे शु कं हं रुट् का जानी गगाभानि
 कालिपीकि गय शुक्र जक कृष्ण वर्धन मूढार्य नद कृप पत्रिने मज कृप पद्म वज्रा
 गिव शुद्धि कुर्यात् ॥ नृप स्कंध वे वाचनः वदना स्कंध पद्मनृथ्यध्वनः सखा ज स्कंध
 ध्व वज्रा नागः विलान स्कंध वज्रसत्त्वः सर्वगथागमत्वं श्रीहृज कवजः चक्र धामाह
 वज्री गगना दधवज्री घ्राणयात्री ध्यावज्री वक्रवागवज्री स्यर्हमात्मसूर्यवज्री स
 र्वायन नृथ्यध्ववज्री ॥ पृथिवी धारुपागनी ॥ अम्भारुमा जधीन जी धारुजाकर्ष
 धी वायु धारुपद्मनृथ्यध्वनी ॥ अकाश धारुपद्म द्वालिनी ॥ पंचस्कंध हं का जे देवता

ॐ वज्रं लहं पै हूं ॥ ॐ वज्रविमानं लहं रवै हूं ॥ ॐ वज्रध्वजालगं गंगं ॥ ॐ वज्रक्षाल
नलार्क हूं ॥ ॐ मिदिग्वन्धनं ॥ ॥ प्राकालवहिरुं काचनिष्पन्नं पुष्पकुसुमपु
निवसिमान् ॐ न्द्रादिविघ्नान् हृदयकिलकं धृत्वा वज्रमुद्गलेनाकाटयन् ॥ ॐ घघ
घाटय २ सर्वशृणु हूं हूं रुट् ॥ ॐ कीलथ २ सर्वपापान् हूं हूं रुट् ॥ ॐ वज्रकीलय वज्र
ध्वजः अस्त्रायग्निसर्वविघ्नविनायकानीः कायवाक्चिह्नं वज्रकीलय हूं हूं रुट् ॥ ॐ मि
किचलमंत्रं ॥ ॐ वज्रमुद्गलवज्रकीलयमाकाटय २ हूं हूं रुट् ॥ अकाटनमः ॥ ॐ
मिनिर्विघ्नीरावथन् ॥ ॥ ॐ निजदावक्ररावनाविधिः ॥ ॥ नमः स्वहृदयस्थ

ਭੁਵਨੀ

हं का न ज मि रि ४ ऊ ग द र्थ कृ त्वा अ क नि ट ग त्वा न ग्र थ अ ना दि सै सि डि ३ श्री चै व
ह नू क भ ग व न्क भ ग व नी स मा प न्नी स मा ६७ ल यै प ६ ध नू ॥ न मा रु द्वा ऊ न ठि म मा ला
रि जा कृ ष्ण स्ना न च कृ मा का ६१ द ६१ द द्वा अ रि मू ख म रि सै पू ज्ञ स म न स म य म
६७ ल यै प ६ ध नू ॥ श्री चै व कं चै नू स म न सि कृ त्प म न्ना म यी रि ४ पू ज्ञा दे वी रि ६ ध पू ज्ञ य नू
॥ हं ३ श्री ह नू क प्र व न स त्का जा य पा र्थी प्र नि कृ स्वा हा ॥ ॐ श्री ह नू क प्र व न स त्का
जा य अ च न्ना र्थ प्र नि कृ स्वा हा ॥ ॐ श्री ह नू क प्र व न स त्का जा य अ र्थ प्र नि कृ स्वा ॥ ॐ
श्री ह नू क प्र व न स त्का जा य प्रा कृ म न्प्र नि कृ स्वा हा ॥ ॐ हं वै हा ॥ पु ष्य न्मा स ॥

ॐ श्री वक्र हं नृ नृ क हं हं रुट् ठाकि नीजा लसम्बर्ग साहा ॥ रुदय ॥ ॐ श्री ४ हं
हं हं रुट् ॥ ॐ प हं दय ॥ ॐ वक्र वे वाव नीय हं हं रुट् ॥ द व्या रुदय ॥ ॐ सर्व बुद्ध ठाकि
नीय हं हं रुट् ॥ द उ प हं दय ॥ ॐ ठाकि नीय हं हं रुट् ॥ ॐ आभ हं हं रुट् ॥ ॐ रव ७ वा
हं हं रुट् ॥ ॐ नृ पि पीय हं हं रुट् ॥ ॐ वा धि वि क्ता मृ नरा ७ हं हं रुट् ॥ ॐ क नृ प व ७
हं हं रुट् ॥ ॐ कु नृ व ७ आ कीय हं हं रुट् ॥ ॐ व न्ध २ पला म गिय हं हं रुट् ॥ ॐ आ धिय २ म
हा ना हा हं हं रुट् ॥ ॐ आ रुय २ वी व म नीय हं हं रुट् ॥ ॐ श्री २ रव व नीय हं हं रुट् ॥ ॐ हं
हं हं रुट् ॥ ॐ हं २ प्र म क्ता य हं हं रुट् ॥ ॐ नि वि रु च क ॥ ॥

ॐ रुट् २ नृ वा व नीय हं हं रुट् ॥ ॐ द ह २ म हा रु व नीय हं हं रुट् ॥ ॐ प व २ वा यु व ग हं हं रुट्
॥ ॐ रुट् २ व म नृ धि गं ग मा ला व ली वि नी स नार कीय हं हं रुट् ॥ ॐ गृ ण २ स फ पा मा ल
ग न रु अं ग स र्प वा ग अ य २ स्मो मा द वीय हं हं रुट् ॥ ॐ अ क न्ध २ स रु ड हं हं रुट् ॥ ॐ श्री
श्री ह्य क हं हं रुट् ॥ ॐ श्री रव गान न हं हं रुट् ॥ ॐ नि वा क च क ॥ ॥ ॐ द म्नी २ च क
व ग हं हं रुट् ॥ ॐ हा हा रव ७ वा ह हं हं रुट् ॥ ॐ श्री श्री श्री श्री नीय हं हं रुट् ॥ ॐ हं हं च क
व मि नीय हं हं रुट् ॥ ॐ कि लि २ सु वी न हं हं रुट् ॥ ॐ सि लि २ म हा व ली हं हं रुट् ॥ ॐ हि लि २
च क व र्कि नीय हं हं रुट् ॥ ॐ धि नि २ म हा वि र्थी हं हं रुट् ॥ ॐ नि क य च क ॥ ॥ ॐ का

कमल हूं हूं रुट् ॥ अं उल्ल का म्प हूं हूं रुट् ॥ अं ध्व ना म्प हूं हूं रुट् ॥ अं क ना म्प हूं हूं रुट् ॥
अं ज म ठा गो थ हूं हूं रुट् ॥ अं ज म ड गो थ हूं हूं रुट् ॥ अं ज म ड् डी थ हूं हूं रुट् ॥ अं ज म म थ
नी थ हूं हूं रुट् ॥ ॥ अं व ५५ गु हा ला य स्वा हा ॥ अं ग क ला य स्वा हा ॥ अं क्वा ला क्क ला य
स्वा हा ॥ अं क लं क रे न वा य स्वा हा ॥ अं ट ट्ट हा सा य स्वा हा ॥ अं श्री व न ह्ना स ना य स्वा
हा ॥ अं धा ना न्ध का ना य स्वा हा ॥ अं कि ति कि ता ल वा य स्वा हा ॥ ॥ पं चा प चा न
पू जा ला ५५ घ ५५ वा द ना मु नि ॥ स र्व क्क लान र्सी दा हं रु ग द र्थे प्र सा ध कं । वि न्म म
ति नि वा ह्ने र्नी सी स म्म र्ने न मा मु ग ॥ व्या फ वि ५५ म हा ह्ना र्ने र्नी सी स द ति

नी । कृ पा क्रा धं म हा नो डं श्री स म्म र्ने न मा मु ग ॥ न र्प ५५ ॥ अं न मा रु ग व न बी न वि
प्र ५५ ना य हूं हूं रुट् ॥ अं न मा म हा क ल्या ग्नि स नि ला य हूं हूं रुट् ॥ अं न मा रु टा मू क टा
क टा य हूं हूं रुट् ॥ अं न मा ड्डा क ना ला गु शी प ५५ मू खा य हूं हूं रुट् ॥ अं न मः ५५
रु ज ला ख ना य हूं हूं रुट् ॥ अं न मा प न शु पा ङ ति शू ल ख बी ग धा नि ५५ हूं हूं रुट् ॥
अं न मा व्या प्र च मा म्म र्ने न ध ना य हूं हूं रुट् ॥ अं न मा म हा धू मा ध का य हूं हूं रुट् ॥ ॥
ह र म पू जा ॥ वा म क न म ध्व न क प क द ल क म लं धा ला ॥ पू ष्य ना स ॥ अं व व ड् वा ना शी
थ हूं हूं रुट् ॥ अं हां यां या मि नी थ हूं हूं रुट् ॥ अं ड्रिं मां मा हि नी थ हूं हूं रुट् ॥ अं ड्रिं ड्रिं स

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ हूं हूं सीतासिनीय हूं हूं रुद्र ॥ ॐ रुद्र २ व छि काय हूं हूं रुद्र ॥ ॐ
हृ ४ वक्रस त्वाय स्वाहा ॥ ॐ नमः ४ ही वे प्राच य स्वाहा ॥ ॐ स्वाहा हूं पद्मनृत्त्ये स्वनाय
स्वाहा ॥ ॐ वायुय हं च त्वस म्भवाय स्वाहा ॥ ॐ हूं हूं हा ४ वक्र सूर्याय स्वाहा ॥ ॐ रुद्र
रुद्र हूं पद्मनाभ वक्राय स्वाहा ॥ क नमुधिम स्थायित्वाः पंथापचाज पूजा ॥
सुनि ॥ कल्याण प्रणिपान क नाधिक नाक्षाता बलि धागृहा खद्वज प्रिसु विम
हामे हो सुखवगावाला के विम्बा नू ॥ ॐ ॥ सर्व जगद्गु भाजय पदा श्रीवक्रवा
वाहिका ॥ रावन प्रथमा मिस दु नैवपि श्रीवक्रा नृत्त्य मर्ग ॥ यामि न्या खलू मा

हिनीरुगवनी सक्ता नो सर्वदा सन्ना सिन्या न था पचा सुविमलाया गधनी
व छि व ॥ चत्वा नाहु ऊ कस्वान नमूखि नीलाणी नारो विनी ॥ ॐ मा धू म धू स
जा ॥ समर्ग वन्द्य पदं गीट व ॥ ॐ नमारुगव श्रीवक्र वा वाहि हूं हूं रुद्र ॥ ॐ नमारुग
व श्री आर्य भ पचा ॥ ॐ लाव्य मा न ज म हा विश्व धनी हूं हूं रुद्र ॥ ॐ नमः ४ सर्व रुम
रुया वह महा वक्र हूं हूं रुद्र ॥ ॐ नमावज्ञासन अकि न भ पचा कि न वडा कयी
नयनासिनी हूं हूं रुद्र ॥ ॐ नमा ॥ ॐ घनी प्राच नी क्राट नी कला लिनी हूं हूं रुद्र ॥ ॐ
नमा ॥ ॐ गानी मा ज नी पचा ऊ य हूं हूं रुद्र ॥ ॐ नमा ऊ य विऊ य ऊ म नी स्म म्

नी माह नीय हूँ हूँ दूट ॥ ॐ न भाव को दी वज्र वा जा ही महा याग ध जी का म ष व
वीरव ग हूँ हूँ दूट स्वाहा ॥ रु ग व ग्या र्व न म न्नु . ङा ना द्र ज ध द धि कु र्या न् ॥ ॐ
मि रु स्त पू जा ॥ ॥ ग ना पा प द ङा ना ॥ कृ ग का त्रि न म न्नु भा दि न म घ म खिल नि
हि न द्वा षा धी प्र मि द ङा या मि पू ज न्नु पू न त्र क त्र धी स म्ब र्ज वि द ध्वा व क र व अ जि
ना रु जि न स र्ग सी रु ना नि कु ल ना नि . अनु भा दि ना नि वा धो स म्प क्क रि ष म या म्प
ष जि न त्वा दि नि ग र्य धा व धी या व ज्ज ना स्मि न् सर्व र्ग व न्नु सि र्ज न या नि रि स र्व
रा व न्नु वा धो चि र्ग वि द ध्वा अनु रू प्र मा र्ग न धा स्य म्प नि ॥ ॐ मि अ दि या ग प्र थ

म स मा धि ॥ ॥ न द नु मे शि क न्नु मू दि ना प ज्ञा व रु र्व अ वि हा जी वि रु द्धः
॥ ॐ स्व रा व धु ज्ञा स र्व ध र्मा धी . स्व रा व धु ज्ञा हं ॥ शु न्य गा ह्ना न व ज्ञ स्व रा वा
त्स का हं ॥ वि रु मा र्ग रु वे नि रु वा धि स म्प ज पू ज धा न्नु ॥ ग ना प्र मि धा न व सा
न ॥ ॐ न्य गा ना प्र मि रु द्धा ॥ ॥ र्प का न ध वा य म धु ली नी ल ध न्वा र्ग ॥ ॐ
कि र्ग . न द प नि र्ग का न्नु न्नु अग्नि म धु ली त्रि का र्ग न र्ग न र्ग कि र्ग .
न द प नि ॥ वं का न ध व न्नु धा म धु ली व र्ग न्नु न्नु न्नु न्नु कि र्ग . न द प नि र्ग का न्नु
पृ थि म धु ली च रु न्नु धी पी र्ग का न्नु पु त्रि रु चि क व ज्ञी कि र्ग . न द प नि र्ग का न्नु न्नु क र्ग

[illegible]

स शि न र्ग वि ष्व व र्जा कि ग भो लि नै उ टा म कु टि नै वा भ व नि गार्द्ध च न्द्र धा नि र्ग .
 इ कि ए शु क्क मु र्ग व द्र मा ला र्ग स्थि न प च्च क पा ल धा नि र्ग द्वा द श रु ज भू ति र्ग
 ए रु ज द्द य न व द्र व द्र य ष्ठ ध र्म दु गी य रु ज द्द य न ग ज च र्म व न ध र्म . ग्नी
 य रु ज द्द य न . उ म नू र व त्वा ज्ज ध र्म व रु र्थ रु ज द्द य न . क र्त्ति र्ग क पू र्ण क पा
 ल ध र्म . पंच म रु ज द्द य न प च्च शु पा ण ध र्म . ष ष्ठ म रु ज द्द य न शि र्ग ल व ह्म शि
 र्ग . स द्य प च्च श न न शि न मा ला धा नि र्ग व्या घ्र च र्म नि वा श र्ग शि न . बी र्ग .
 वि रु त्स . जी ड . हा र्म रू या न र्क . क र्त्त धा ग्नी र्ग श्म नि न व ना द्य न सान्नि र्ग .

चक्रिकुलकलि कयुव शिनाममि यहापविन रुस्मधमिषट्मुद्रामुद्रिर्ग
चविमलुल वामदक्षिनरुगपमिगहेव वकाली नाथी वामक र्हे. स्मनयुग
लयाः अलितासन स्थिर्ग रुगवर्नी रावयन् ॥ रुगवर्नी वद्रावाहा वकवर्हेमु
ककः शशिनशा चकवकादिगम्बना खलुमलिगभखला धिरुजा वामरुजा
ननकपूर्व कपाल धनादक्षि धरुऊन डष्ट नर्कु नि कर्त्तिका सव नूधिमाननी ऊ
घाद्यन रुगवर्नसमागु घा नुजा गयनि रुगवर्नी रावयन् ॥ ॥ गगः सम
यचक्रः स्मन नयुक्त नात्यनी विष्णुदल कमलस्व नूपी माह न्द्रमलुला नूट

विष्णुवर्हे विचक्रै क नूपी श्रीकाजा धिष्टिर्ग जलावली पविर्गुर्ग महासुखकाया
त्मकी चिरु वाक्कायस्वरा वीरावयन् ॥ गग पूर्वदल ठाकिनी नीला उरुवपु
लामाहरीगा पश्चिमपुत्र खलु ॥ नाहोवका दक्षिणपुत्र नूपिनी पीमा ॥ नासुस
वाचुटा अलीटासन स्थिगा चकवका चरुऊ जा वामकपालखर्द्वा ग दक्षिण
उमनू कर्त्तिका डष्टा कलालवदना शिनाम मुककः शप मुद्रा विरुधिगा ॥ वि
दिग्दल पुत्रला विवा धिचिरु कपालिनी ॥ ॥ गगः हि विरुवक्र हंका
वर्ज अष्टाल अपमलुला नूट हंका नाधिस्थिर्ग वद्रावली पविर्गुर्ग धर्मका

21211211 12. 12. 12. 12. 12. 12.

281 H

807122503076

15

ॐ वक्र ॥ ॥ गच्छहि वाक् कं अका न निर्या न मष्टा नं न काम एता मूर्तं न
का नाधिस्थिर्न न क पद्मा वली प निवृत्तं स भ्राग कायात्मकं म न्य नृस्व नृप रूत
निस्वरु वं रा वथन ॥ गच्छ कौं ऊ पूर्वा न काम नृप अ कुलिक ने नो वमी ॥ ॐ ऊ
उरु जात्र आदिया ने वज्र मिल महारु न वा ॥ ॐ निरुप प्रहा क निजा निपा न मिना
निरोध हान ॥ ॐ ऊ पश्चिमा न गिस कु नो महावी न वायु वग ॥ कौं ऊ दक्षि
न का शलायी वज्र हं का न सू नारु की ॥ ॐ निरुप कृत्त अविस्म मि वी र्य पा न मि
ना मार्ग हान ॥ कं ऊ अर्न या न कर्त्तै रा सुरद्रा ॐ मा दधी ॥ ॐ ऊ ने म न्या न ल

म्या क वज्र प्ररु सुरद्रा ॥ ॐ निरु क न्दा ह अरि मुखी ॐ न पा न मिना कृ य हान ॥
कौं ऊ वायु व्या न कौं वि महारु न व ह य क ॥ ॐ ऊ ॐ ॐ न ना न हि मा ल थ वि
नृ पा ऊ स्व ग न ना ॥ ॐ निरुप कृ न्दा ह सुदु र्ज या प्र हा पा न मिना अनुत्पा द हान
॥ ॥ ॐ निवा क वक्र ॥ ॥ गच्छ वाक् काय न कं ऊ का न ज म मष्टा न वायु म
एता मूर्तं शु क कं का नाधिस्थिर्न न क्रा वली स म ली क र्म निर्मा ए कायात्म कं
पा गाल स्वरा वं पा गाल वा सि जी स्व स्व नृप रू वथन ॥ गच्छ प्रं ऊ पूर्वा न प्र न पु र्या
महा वल च क वग ॥ ॐ ऊ उरु न नृगु क देव नायी ने ल वज्र ख ए न हा ॥ ॐ निम

लापकद्रुर्गमा उपायपायपात्रमिना धर्मज्ञानी॥ सौं ऊं पश्चिमात्र सो वा शुभ्य
 यी वल्लोहिनी॥ सुं ऊं दक्षिण सुवर्णदिप अन्तागर्हचक्रवर्तिनी॥ ॐ मिषम
 लापक अचलाप्रतिधीपात्रमिना न्वयज्ञानी॥ नै ऊं अग्नेयात्र नगत्र ग्रीह नूक सुवी
 वा॥ सिं ऊं नेत्रायात्र सिं धोपमनृग्य ध्वज महावला॥ ॐ मिश्रभः न साधुमनित्र
 न पात्रमिनासंवृतिज्ञानी॥ मं ऊं वायुव्यात्र मलो वेवात्र नचक्रवर्तिनी॥ कुं ऊं त्र
 शानात्र कुलगायी वज्रसत्त्व महावीर्या लावयन्॥ ॐ मित्रपः शमः धर्ममघा
 ज्ञानपात्रमिना पत्रचिह्नज्ञान॥ ॥ ॐ नि कोयचक्र॥ ॥ ख ६६ कपाताद

थावीनार कवकाचतुर्जुतात्रि नग्रा ऊटामकुटि अनि ऊं एतुठदथनवडाव
 द्रघ ६६ धर्त्रीद्विगियरु ऊ दथनखद्वीग दक्षिण उमत्र कं पैच मुद्राविरूपि
 ना अनिरासनस्थिगा॥ प्रच ६६ अदिद व्यास कवका उजा अनि ऊं कपाल
 हस्ता दक्षिण कर्क कर्क नग्रा जोड नृपिनी सु क कं ६६ अद्ययागसमापना
 महा नागानु नाग नोदि गम्व ना पैच मुद्राविरूपिगा दवा नीदवी नीचक्र नाय
 थ अरु व तीरावयन्॥ ॥ ग ६६ पूर्वद्वान का का स्या नीला उरु न द्वा न उरु का
 स्या ६६ मा पश्चिम द्वा न ६६ ना स्या न का दक्षिण द्वा न शूक ना स्या पीगा॥ ॥ अ

एन का नय मडगी कृष्ण पीना. ने ज्ञ का नय मडगी पीन न का. वायु व्य का नय म
इं डी न कऽ धामा. ॐ. एन का नय म म धनी धाम कृष्ण रा व थ गु ॥ न ना था गि न्या
अ क व का च उ र्जु ता. प्र त्या ली रा स वा स ना नि व र्ज ना र्प व मु द्रा वि रू षि ना क पा ल
ख दा न वा म च. द कि. ए उ म नू क र्दि का. उ द्वा क लाल व द ना वि रा व्यः ॥ ॥
ॐ अ ४ हं शु क्त न क कृष्ण व र्ध सि न क ४ हृ द य क्र म ए वि रा व्यः ॥ स्व र्ग म ध्या पा
ना ल व क मु र्ति रु व उ ध्या न ॥ ग न ४ पू र्व व नू अ ज न्या स ॥ ॐ अ ४ हं सर्व वी र्य या गि
नी का य वा कि रु व द्रा स्व रा वा त्म का हं ॥ ॐ व द्रा शु द्धा सर्व धर्मा धी व द्रा शु द्धा हं

सं नानि ग ह्ना न च क्र मा का ण द. ए द द्वा. ऊ हं वं हा ॥ अ त्म नि म ४ ल षु या कृ ष्य
अ न्ना म शु द्धा सर्व धर्मा धी था ग शु द्धा हं ॥ ग द नू अ रि षि च तु मी स र्व वी न था गि न्य
ग्री ह नू क व द्रा स्व रा वा त्म का हं ॥ य था हि ज्ञा न मा शु ए. स्ता पी ना स र्व न था ग न.
न था हं स्ना प यि ष्या मि. शु द्धी रु दि व्य न वा नि ए ॥ ॐ अ ४ हं सर्व न था ग न अ रि ष क
स म ग्री य हं ॥ ग न ४ म कु टा रि ष क ४ ॥ अ रि षा कं म हा व द्री व्र धा नु कं न म स्तु
न द दा मि स र्व बु द्धा नी शि गु ष्ठा ल य स म्भ व. ॐ द न्ज ल स र्व बु द्धा नी यु ष्मा की ष
अ ना य च स कु ट प के कु ला ल व ॥ ॐ स र्व बु द्ध नू ता म शि म हा म कु र्ठ पु मि

ॐ स्वाहा ॥ ॐ वज्र धर्म ॥ ॐ श्री अरिषि कर् ॥ ॐ वज्र वज्री नी अरिषि कर् ॥ ॐ वज्र
वज्री नी अरिषि कर् ॥ ॐ धर्म वज्री नी अरिषि कर् ॥ ॐ कर्म वज्री नी अरिषि कर् ॥
ॐ मिमकुटा रिषक ॥ ॐ यारिषक त्वमसि बुद्धे ॥ वज्र नामा रिषक ॥ ॐ दूग
त्सर्व बुद्ध त्वं गृह्ण वज्र सुसिद्धय ॥ वज्र ॐ वज्रा धिप नित्या मरिषि ॥ मिमिष वज्र
समय स्वं हा ॥ वज्र घ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ घ ॥ ॐ वज्र स त्वामरिषि ॥ मिमि वज्र नामा
रिषक ॥ ॐ श्री ह नूक नाम न थ ग न कु र्नु व स्व ॥ नाम ॥ ॐ वज्र स त्वसं ग्रहा
त्वज्ज न त म नु र्नु व वज्र धर्म ग यि न वज्र कर्म कृता ह व ॥ अति ग न मुद्रा ॥

ॐ श्री ह नूक वज्र स्वरा वा त्म का हं ॥ पु न ॥ अ क र्ष ॥ पु ष्य न्या ॥ पु क्श प चा
न पूजा ॥ धर्म ॥ श्री व क स म्ब न सु स म्ब न वज्र ज क वी न ध्व नी प्र व न ग ॥ धि
जा ज की ला त ना ल लि न वा हु यु ग प मुद्र ॥ का नू ध नि र्ह न ध मा मि न व सि घ्प प म्
॥ या गे क ल स्य ह व व न्ध न र्द की नि वि स्ला मि न बुद्ध प नि गु द्ध स नी र्ज ॥ प्र ध व
दा ष ड् नि मा म ल वा ध नू र्प स म्पू क्श नो मि न व पा द यु ग ज न धु म् ॥ ॐ मि
म ध ल जा ज यि ना म ड्गी य स मा धि ॥ ॥ ग न ॥ अ ती का ती प कि प र्क न
स्मि का न् र्नु व ध द व ना वृ न्दा नु द्वा न य न द कि न वा यू ना नि सृ ष्य ज ग धि न

की श्रु भनादि स सिद्धि वीज वीज नी सम वसिष्ठ त्वा वाम ना सा पुट न प्रव १५. ना
रूप नि विम्व वरु स्वाहा कार जे न्यु म ७ ली तु त्वा वि वि न्यु ॥ गुरु मटि नि शुक्त
हं कार जे गुरु विजं प वि धर्मी ग व नं सह ऊ सम्व रं शुक्त वर्ध मा ली रा स न स्थ
मा का श लि पि न चि रू ग द शी द्वि तु ऊ क मुख व द्र व द्र घ ७ धन मुरु या र्णा व द्र
क पा ल धा नि धी द्वि तु ऊ क मुख न क वर्ध व द्र वा जा ही मा त्मा नी रा व थ ग ॥
ग थार्मा या सु ज न ध्व नि मा कृष्ट ध्रु धा तु का त्म क चक्र क्र भ न रा व थ ग ॥ ऊ ग नि
१५ १५ न शु १५ १५ ना नि समय चक्र समय चक्र काय चक्र काय चक्र वा कृ क

वा कृ क चि रू चक्र चि रू चक्र ऊ कि न्या दि पु रू कि मा द य ४ य थ य थ न पु वी ऊ पु
न थ न थ रू ग व न्मु ख पु रू ग व शो द्वि तु ऊ ग त्प रू या ४ प्र नि स्था रा व नी या न व सम
य सु ज न महा ना ग द वा प न न द व प वि धर्मी सि न्धु ना च का हा ल ग द शी हं कार जे महा
सु ख म र्थ रा व थ ग ॥ गुरु उ का न उ कार ह का न ह कार नि न नि न सि सि ना ध र्ज न
ऊ र्ध च न्द वि न्दो वि न्दु ना द ना द च वा ला य ग न सह स रा ग न्प र्चि न्थ ग ॥ नि र्वि क ल्प
म हा सु ख म र्थ चि रू नि न्प थ ग ॥ स्व द १ मटि नि म ७ ल च क्र म धि मु न्य ॥ पूर्व व रू
अ क र्ष १ पा द्या दि पू ष्प न्या स पी ली र्ध रू न ॥ ॥ ॥ नि महा या ग नृ नी य ४ समा धि

किंचिन्नुक्तथागनाम॥ ॥ गंगाजापमाह॥ ॥ नाहिन कं ह्वन ज क हं
 काजनादात्मनुमात्मात्थयसुखात्रिर्गण्यस्वनाहोप्रविध्वज्जमार्गोपमं गृहि
 त्वा अथ धूमिमार्गोत्थय रगवनीसुखानिष्टस्वसुखद्वानप्रविध्वनादवीती
 नपुननस्मादुत्थयसर्वत्रुमन्त्रिविरावयन्॥ रगवनीरुगवनीमूलमन्त्राणी
 जापयदिनिजापविधि॥ पूर्ववन् अथापूपीतीर्थे रुम॥ ॥ गंगावनीमालस्थ
 न॥ पुत्रगार्थकाज एवायमल्लनैर्नृपतिर्नकाज एवायमल्लनैर्नृपतिर्नकाज
 धेनिमल्लनैर्नृपतिर्नकाज एवायमल्लनैर्नृपतिर्नकाज एवायमल्लनैर्नृपतिर्नकाज

वस्तिर्न॥ गङ्गाकादिकं अं ग्रां अं खं हं लं मां पं गं वं काजजागदधिष्ठिर्नपंचासृमं
 पंचपुंदीपं नृपं निष्ठाथ वायुपुत्रिगद्गलिगात्रिगापविलीनं वीजाज्जादिकं अस्तिन
 वरान्नवर्षे देवपुंष्टद्वागदपनिपाजदवर्षे विगस्तिमार्गं गत्रिगं हं रुवात्मा मूखा
 मृगमयः १३ क्खवदीर्गं गद्वापविलीनं पाजदवर्षे गीमलं च दद्वा॥ गद्गपनिअतिका
 लिपनिनमं ४॥ अं अं ४ हं काजस्थ ४ अनुकम एउपनिस्तिमं ४ वक्रदवमास्या
 त्रिगाजगदर्थं कृत्वा सकलामृगजसमानोयसमापत्तिपूर्वकं द्रवीरुययथायथा
 नृपुदीअपुपुमिष्ठारुवनीया॥ अं काजदिक्रमसाविलीनमवलाब्धं अं अं वलि

अधिष्ठानी ॥ गंगा दत्ता मुद्रा वद्धा ॥ हं का न पूर्व क रुग व न स प वि वा ज्ञा क र्ष थ ग ॥
 अ क र्ष थ मुद्रा मा ह ॥ कृत्वा गु ग थि ख त म ध सु ची म जु ष व द्रो ह ध सी प्र था स्थि गं . स
 स्थप्य त लान द ह ॥ अव स्त व र्ण न तु वि ज्ञा म थ ग ॥ अ क्का न पा दार्द्र दृष्टि मृद्भि र्हं का न
 ना द द ह ॥ दि ग्ता क धा तु स्था क र्ष थ ग ॥ वी ज या गि त्री ॥ पा द्या दि पु ष्य न्या स . पी ली टी तु ग ॥
 गंगा अलि कालि पवि त्र म च न्द्र सूर्य क ज द्वा न्म हं का र्ज दृष्ट्वा . अ न्या न्या नु ग ना स
 र्व धर्मा . ओं प न स्य ना नु ग ना स र्व धर्मा . ओं अ न्या न्या नु ग ना स र्व धर्मा . च न्द्र सूर्या नू र्ण
 हं का न प वि त्र म न . व द्वा ऊ र्त्ती उ र्ध वि क च कृ न क ज द्वा न्म द मृ ग हा . अनि अ न

स्थप्य ध्वा त्वा वलि धिका नार्थ मि दं प ० ग ॥ द द्य प्र मा र्ने समय प्र मा र्ने . ग द्वा क वा र्ज च
 प न प्र मा र्ने अ ग न स थ न र व यु ज ना ४ द द्य म मा नु ग्र ह हं रु ग ना ४ रु ग न र्ण हं रु व
 शु क्क जि ह्वा वि रा व्य ॥ ओं व द्वा ल लि द ह ॥ ऊ र्ण वं हा ४ ॥ ओं व द्वा अ कि नी समय स्त व ह ॥ ह
 रु ग व न्म न त्प ज्ञा पा ता कि न्या दि नी . का का स्या दि नी च टी क थ ग ॥ ॥ ओं क च २ कु
 नू २ व भ्व २ शा स य २ ऊ र्ण य २ द्रौ द्रौ र्ण २ रु द् २ द ह २ प च २ रु ऊ २ न स नू धि ज्ञा न
 मा ला व ल म्बि न . गृ द्वा २ स फ पा ना ल ग न रु ऊ ग स र्प वा न्म ऊ य २ अ क थ २ द्रौ २
 ह्मा २ ऊ २ ह्मा २ द्रौ २ ह्मा २ कि लि २ सि लि २ हि लि २ धि लि २ हं २ रु द् २ स्वा हा ॥ ॥

ॐ निमल शिखर दवना ॥ कथम् ॥ ॥ अंख ख खाहि २ सर्व यक नाक
 स. रुम प्रम पि ॥ अना न्मांता ज. अपस्मा जता कता किन्पाद य. ॐ दैव ती गृ द्वा
 नु समय ज क नु. सर्व सिद्धि भय य क नु. यथेव नथेव. उं ज थ पि व थ जि घ
 थ मा गि क म थ म म सर्व सत्वा नां च. सर्वा का ज क न या. सत्सुख प्रवृ ध य सहाय
 कारु व नु हूं हूं रुट् रुट् स्वाहा ॥ ॥ ॐ नि श्री ह नू क स्य सम्पू र्ण चक्र मुख
 ल्या न पू जा विधि समाप्त ॥ ॥ ॥

अं नमः श्री कोला ॥ ३ ॥ ॐ अहं श्री वज्र सद्गुरु वज्र वज्र वज्र कमलाय सम्प क
 शाना वरा सनैक जाय न माहं नमः ३ नमानमः ४ रुक्मा हं ली नमः ५ मि गु न्मा
 थै प्रसि द म ॥ ३ ॥ त्पाद रु ज न हि नां. वज्र द ह धा जी. न क प्र ला वि ज य नी तु धा रु जी. व
 ज्र ग धा गु ण ग ॥ ४ ॥ समल कु मा श्री. मरु च यी रु ग व नी ज न नी जि ना नां ॥ नमः ४ ॥ नमः
 नां प्र व ॥ न न्म र्व श्री वज्र द वी नृ प माली न्म. न दा का नै ज ग ल र्वी. क विष्णामि गिय ल्क
 नै ॥ न मा दि ग्व न्ध न या य ॥ ॐ सुम् निसुम् हूं २ रुट् ॥ ॐ गृ द्वा २ हूं रुट् ॥ ॐ गृ द्वा पय २
 हूं रुट् ॥ ॐ अ ४ नय हा रु ग व न वि द्या ना उ हूं २ रुट् ॥ ॥ थ न म नु पा उ श्री क उ

बालगन ना कपु स्पंगय ॥ डं ह्रीं ४ क्रो ४ ७४ खं स्वाहा ॥ पून पात्र ७ न्यर्गा राव य म
क्रो का न ध प म रा ऊ न. मां का न ध मा म की कृष्ण दि तु जी व द्रा व द्रा ह स्ता. हं का न
ध का र्य क र्ण दि रु ऊ व द्रा व द्रा ह न. न यो डी पू न या र्थ ध ड वी रु न प ध म ॥ पू न ४
ह ४ हा ४ क्रो ४ ७४ खं स्वाहा ॥ डं सर्व रु क कामि नी. सर्व रु कु सा ध नी. गु ष्ठ व द्रो नी
क्रो रु ध नी. सर्व द्र व्य व्या पि नी स्व ध य २ हं अ मृ न अ मृ न नृ प य व द्रा थ हं स्वाहा ॥
न गा वा म क न म ध्व न क प के द ल क म ली ध्वा त्वा ॥ ध न ख ड ला हा म स न क व
न न न. न्या हा प ल वा र्ण. स्वा न वा य ॥ डं वं व द्रा वा वा ही थ हं २ रु ट् ॥ द थ ॥ डं ह्रीं

या मि नी य हं २ रु ट् ॥ क ड न नि र्ण. न्या ह प ल सी. स्वी. ख ड क र्थ वा य क ॥ डं क्रिं मां
मा हि नी य हं २ रु ट् ॥ डं क्रिं क्रिं सें चा नि नी य हं २ रु ट् ॥ डं हं हं स न्या सि नी य हं २ रु ट् ॥
डं रु ट् २ व धि का य हं २ रु ट् ॥ प. कृ प हा न पू जा ॥ रु मि ॥ या मि न्या र व लू मा हि नी
रु ग व नी. सें चा नि धी सर्व दा ॥ सी डा सि नी न था प वा सू वि म ना था र्ग ध्व नी व धि
का ॥ च त्वा वा तु उ प्र क ध्व न न मू खि नी ला ली ना लो जी नी. ध्वा मा धू म धू स ना ध्व स
न नं. व न्द प र्द ना न्द वं ॥ ध्व स्वा न थ ड कृ ल सी न य ॥ थ न ह स्त सी ध न ॥ वा म क न
वृ डा दु नि पू ॥ डं वं. आ ला ॥ हो यो. वा ला ॥ क्रिं मां. द थ ला ॥ क्रिं क्रिं. अं गु ति ला ॥ हं

चला॥ रुद्र २ सकलं. भृगुलिया आ॥ धन पात्र सखानन स्य. मूलमं प्रपदपं काख
थ. द वीरालप॥ वामकन धन वगृहीत रुगवती मं गी लावयन् ॥ धन खडालाहा
नन. पात्रया धन कयाडा. द वीयामनु न धडा मातु हीहाय ॥ धन भृग न्यास॥ ॐ वं.
न्यरू॥ हांयों. नगल॥ क्रौं मों. मूतु॥ क्रौं क पात॥ हूं हूं. वस पात॥ रुद्र २ सकल न
॥ हनं द वीयामनु न. खडालाहा निन धन कयाडा. म ल पाता सहोया॥ प्रिय नाक
मूडानथि संगथ. पून चतुर्विंशति भृग न्यास॥ ॥ पूं जां डां भृं गें लां दें मों कों डां
थि कां कें लें कों क्रिं प्रें गुं सों सूं नें सिं मे कूं पीं अप पीं ० कुं प्राप कुं प्र कुं प्र प कुं

न. मलाप का मलाप क ४ ६ म ६ म नाप ६ म ६ म न॥ सकल नं थिय॥ ॐ अहं॥ ॐ
खाधिष्ठान॥ द वीयामनु न पूष्पा धिष्ठान॥ ॐ अहं म ल लाधिष्ठान॥ ॐ अका
शमूख सर्व धर्मा धमा र्थ नूत्यं न त्वाद् ॐ अहं हूं रुद्र स्वाहा॥ वलि अधिष्ठान॥
॥ ॐ स्तानमन ऊहूं॥ खडा॥ ॐ याग मन ऊहूं॥ ऊडा॥ ॐ अत्मानमन ऊहूं
॥ ऊल॥ ॐ खराव शुद्धायादि॥ ॐ निमनु मुच्चार्य॥ प्रसाख मात्मना प्रविधान
विष्णु जलं य. सादात्मा क. निर्मा धन नग गधद ह निर्मा धन क थिदु लडा ना न
हम धन वा मा नान पीन सवा. रुद्र याप निवामद क्रि धन वली नि का लि प कि रु

द्रुतिन स्कनपत्रिवृत्तौ. दिन इम लम ध्व. वं कार्जवर्क. न त्यजि लभन रुग
वगी वज्र वा नाही स ध्वसि धूज व र्ही. ई गम नादिग का धस्व रा वी मूलव कुी
दक्षि. ए की ला हा नी ही घ एम डू मू खी. वाम पा र्ध्व. धृग रव द्वा डू. वाम क न गृही
ग न क पूर्ण कपाल धर्मा. दक्षि. ए पु इ मा डू नी ल वज्र क र्मि धर्मा. पाठ हा व धा न
मा डि नी निर्वस ना. डि न सि नी ल द म्हा वि मा ला व स्ति नी. मू क नी ल कू न्न ज शि
जा गृही. प्रणि मू र्वा. न गृ यया. शु व डू धि जा न ना. शिल डि न ज शि ना ह्य धि रा जाल
क र्मा. ई गम न वी न वि रु त्स जो ड हा स्वर या न कर्मा. क नू धा हू न धम नि ज न व ना ह्य

जसा न्वि र्मा. ॥ च की कू ल क षि नू च क म र व ला सं ग्रा दि रिः ष ध्मू ड्रा मू धि नां. स फा र्क कि
न धी रू ल डि मि प्र रा स्व रा त्म ना. अर्द्ध पर्य की नृ ग्य स्ति नां र ग व नीं भा व य नू. ॥ ग नः रा व
ना ॥ ई निर्मा धा च क स्ति न. वं का न न डि मि मा ला रि ज क नि ष रु व न व र्मि नी ला न द व नी मा
कृ ष्य स म य द व य न्क रा व य नू. ॥ आ क र्ष ध. पा आ दि ॥ ॥ रूं ३ ऊ हूं वैं हाः ॥ ईं आ ४ क्रोः
वज्र वा ना हि प्र व न स स्का ना य. पो य म र्धं अ च म नं प्रा ज म नं प्र नि कृ त्वा हा ॥ पू ष्य न्या स या
य. स्वा न वो य ॥ ईं स र्व बु द्ध उ कि नी य व ज्ञ पू ष्य आः हूं रु ट् स्वा हा ॥ ईं व ज्ञ व र्म नी य व ज्ञ पू
ष्य आ ४ हूं रु ट् स्वा हा ॥ ईं व ज्ञ व ना च नी य व ज्ञ पू ष्य आ ४ हूं रु ट् स्वा हा ॥ द यूस ॥ ईं उ कि

ॐ वृहस्पतिाय नमः ॥ चण्डिकाय नमः ॥ पूर्व ॥ ॐ नृपाय नमः ॥ यक्षलाय नमः ॥ उग्र ॥ ॐ न्यायनी ॥ द्वालाकुला
य ॥ पश्चिम ॥ ॐ वाजाहिराय नमः ॥ कवकहेनवाय नमः ॥ दक्षिण ॥ ॐ कोमाय नमः ॥ अट्टहासाय नमः ॥ अग्नि ॥ ॐ
वेङ्कटाय नमः ॥ लक्ष्मिवनहाराय नमः ॥ नैऋत्य ॥ ॐ चामुण्डाय नमः ॥ धात्र्याय नमः ॥ वायव्य ॥ ॐ महा
लक्ष्मी ॥ किलिकिलवाय नमः ॥ ॐ श्री ॥ पं. ला. घं. तु. ग. ॥ नत्वा श्रीवद्रवाजहृद्यादि ॥ कालभघपट
लान्कलाकलविशूदयपटलाधिकलिषं । सत्वरु ॥ नयूगप्रदाहिकं. त्वी नमामि रुगद
महं नृकां ॥ नारिचक्रकूहनाम्बुवासिना. सादवद्रवाजिसमाजसंरुवा. सादसायनसपान
नपटी. त्वी नमामि वउवा नललिषं ॥ मन्त्रमर्पण ॥ ॐ अ अहं २ रुट् ॥ ॐ नृही २ रुट् ॥ ॐ

जमान. स्नापितं पद्धम् ॥ ॥०॥ गित्तुलीचक्रं ॥ ॥ पञ्चानिर्मातृचक्रं दं का ज
 नूपिनी. ॥०॥ न्द्विन्दुरिगना नादा. दवीरुपा मृत्तुवर्गं तुष्टु म्मात्रकलरवाङ्गं गनकायध
 म्यसंरागचक्रमुद्दिश्य. महासुखमापयन्त्या कोलमूर्खमहासुखमयस्वस्मिकं प्रवद्ध
 महासुखचक्रं गत्वा. महाकालावलिबिलिनसच्छिद्य घृगकूम्रवम् ॥ ॥ वदमृग. द्रव्य
 नोत्मानं स्नापयन्ति स्फुटमवाचिं न्यपदविग्रामयन् ॥ अलिषकं महावर्द्ध्यादि ॥
 पञ्चश्रिषककाय ॥ ह्रीवद्रवितानि शीनामाचार्यरुर्तुवस्व ॥ ॥ अपा. पू. पं. ला. घं. तु.
 ग. ॥ ॥ थनहस्तसाधन ॥ गगः सव्यकत्रैजगित्पराविर्गागुप्ति. पञ्चसूचिकवर्द्ध. नूप

ॐः का न ऊं सूर्य माः का जा धिष्ठि र्नी विं रं वं ॥ ज अस ॥ मथे व वा म ह र्नी गु लि षू प म्र प
या का जे ॐः का न ऊं च नु मः का जा धिष्ठि र्नी वि रा व ॥ म या र्म धृ मा कू सूर्ग मथे व द
वी चू पा ह्ना न स त्वे क रू र्नी वि चि न्म ॥ ॥ ध न का प ह्ना ध न ॥ ॐं अ कू लू का नू ल नू अ सा
हि अ म नू वि सा नू ग वि अ व र्म र वू अ लि क सि कू ॐ या ॐ नि सा नू ॥ प दं २ म हा ह्ना न स
व वू द्र म हं रु व नू ॥ हूं ३ हा ३ अ ३ र वं स्वा हा ॥ अ थ वा ॥ ॐं चि न्म म धि प र्व न स्वा हा ॥ ॐ
ॐ ध न ॥ म र व ल र वं हा र्म पू जा या य का प ॥ ॐं मि चि न्म क म था र्ग ॥ ॥ ध न का प
धू र्म नि ॥ पू न अ पा पू पं ली र्घी रु म ॥ ध न व नि स र्व र व त थ ॥ ॥ म द्र यं का न